© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 11 , Issue : 01 | January - March 2024
DOI : https://doi.org/10.36676/urr.v11.i1.01

# भारत में गुरुकुल और आधुनिक शिक्षा प्रणाली : एक अध्ययन

**दिव्य प्रकाश**
शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक
divyaparkash23@gmail.com
**डॉ० कुमारी सुमन**
सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक

**सारांश**

प्राचीन काल में शिक्षा के लिए गुरुकुल प्रणाली मौजूद थी जहाँ छात्र गुरु के स्थान पर निवास करते थे और वह सब कुछ सीखते थे जिससे बाद में वास्तविक जीवन की समस्याओं से निपटा जा सकता है। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया का अभ्यास करने से पहले गुरु और शिष्य के बीच भावनात्मक संबंध होना चाहिए। गुरु द्वारा धर्म, संस्कृत, शास्त्र, चिकित्सा, दर्शन, साहित्य, युद्ध, राज्य कला, ज्योतिष, इतिहास और कई अन्य चीजों का ज्ञान प्रदान किया जाता था। सीखना केवल किताबों को पढ़ना नहीं था बल्कि इसे प्रकृति और जीवन के साथ जोड़ना था। यह कुछ तथ्यों और आंकड़ों को रटना और परीक्षाओं में उत्तर लिखना नहीं था। शिक्षा वेदों, बलिदान के नियमों, व्याकरण और व्युत्पत्ति, प्रकृति के रहस्यों को समझने, तार्किक तर्क, विज्ञान और एक व्यवसाय के लिए आवश्यक कौशल पर आधारित थी। भारत में प्राचीन शिक्षा प्रणाली ने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया था कि जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य आत्म–साक्षात्कार है और इसलिए यह दुनिया में कई पहलुओं में अद्वितीय होने का दावा करती है जैसे कि समाज ने किसी भी तरह से अध्ययन के पाठ्यक्रम या भुगतान फीस या निर्देश के घंटे को विनियमित करने में हस्तक्षेप नहीं किया।

## नए भारत में आधुनिक गुरुकुल व्यवस्था

विचार और नैतिक विवेक की भावना को और अधिक उन्नत स्तर तक पहुँचाते हुए शिक्षा इच्छा की स्वतंत्रता को व्यक्त करने का सबसे पसंदीदा तरीका रहा है। इस तरह के समृद्ध अर्थों के बावजूद, वर्तमान शिक्षा प्रणाली इस सार से रहित प्रतीत होती है, जो व्यवसायिक गतिविधियों के अनुरूप ज्ञान के अधिग्रहण को बढ़ावा देती है।

यह एक निर्विवाद तथ्य है कि वर्तमान समाज, जो युवा पीढ़ी का पोषण करता है, नैतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक मूल्यों के संदर्भ में गंभीर कमियों का सामना करता है। बच्चों पर माता–पिता का दबाव खतरनाक रूप से बढ़ रहा है, अकेले प्रतियोगी परीक्षाओं पर ध्यान केंद्रित करने का तनाव, युवा मानसिक ढांचे पर अधिक प्रभाव डाल रहा है। नैतिक प्रशिक्षण के माध्यम से बच्चे व्यक्तित्व विकास के महत्वपूर्ण पहलू से दूर होते जा रहे हैं। व्यर्थ के दबाव ने शैक्षिक बोलचाल को शिक्षा के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण से हास्यास्पद तरीके से सीखने तक ले लिया है। दुर्भाग्य से, बुनियादी ढांचे की कमी और नैतिक क्षमताओं में गिरावट के कारण पिछले कुछ दशकों में शिक्षा के स्तर में भारी गिरावट आई है। नतीजतन, शिक्षक और छात्र दोनों उन असाधारण सुविधाओं से पूरी तरह से वंचित हो गए हैं जो बेहतर जीवन स्तर को बढ़ावा दे सकते हैं।

छात्रों के पास तीव्र दिमाग होना चाहिए जो जटिल मूल अवधारणाओं को एकीकृत करते हुए विश्लेषणात्मक सोच में सक्षम हों, जो उन्हें मनुष्य के रूप में विकसित करने में सहायता करते हैं। अपनी भूमिकाओं के प्रति सच्चे रहते हुए उन्हें वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान की एक अचूक नींव बनाने की जरूरत है। यह दृढ़ संकल्प, ध्यान और एकाग्रता के गहरे स्तरों के माध्यम से संभव है, जो कि गुरुकुल शिक्षा में निहित है।

## गुरुकुल प्रणाली

गुरुकुल प्रणाली का सार आंतरिक रूप से शिक्षा की समय परीक्षित मूल्यों और सिद्धांतों पर आधारित है। यह बच्चे के ज्ञान और मस्तिष्क के विकास को बढ़ाते हुए एकाग्रता और रुचि की मूल भावना विकसित

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 11 , Issue : 01 | January - March 2024
DOI : https://doi.org/10.36676/urr.v11.i1.01

करने में अपनी ताकत की कल्पना करता है। गुरुकुल के बच्चे बाहरी आकर्षणों से विरक्त होते हैं, एक शिक्षक के सानिध्य में रहते हैं, जहाँ छात्रों के मानसिक, संज्ञानात्मक, आध्यात्मिक और शारीरिक कल्याण पर अधिक बल दिया जाता है। यह प्रणाली एक बच्चे के सर्वांगीण समग्र विकास पर कार्य करती है, अनुशासन, आत्मनिर्भरता, सही दृष्टिकोण, सहानुभूति, रचनात्मकता और मजबूत नैतिक विश्वास जैसे मूल्यों को स्थापित करती है। प्रारंभिक अवस्था में बच्चों को इस तरह के समृद्ध वातावरण में शामिल करने से उन्हें कम उम्र से ही अपने अवधारणात्मक कौशल और महत्वपूर्ण सोच को सुधारने में मदद मिलती है, जिससे बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने में मदद मिलती है।

**भारत में आधुनिक शिक्षा का ढांचा**

भारतीय इतिहास में गुरुकुल प्रणालियों का शिक्षा की गुणवत्ता के प्रसार का एक जीवंत महत्व है। वर्तमान में, छात्रों के लिए सीखने के माहौल की प्रगति को सुविधाजनक बनाने के लिए सदियों पुरानी अवधारणाओं को आधुनिक संस्कृति के साथ मिला दिया गया है। परंपरागत रूप से, गुरुकुलों ने हमेशा व्यावहारिक ज्ञान के महत्व पर बल दिया है। इसी तरह, गुरुकुल शिक्षण प्रणाली आज मानती है कि किताबी ज्ञान और रटना आज समय के उपकरण हैं, जो मानव अस्तित्व के सही मूल्य को प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। गुरुकुल अत्याधुनिक सुविधाओं और प्रौद्योगिकी के साथ व्यावहारिक प्रयोगशालाओं सहित आधुनिक बुनियादी ढांचे के तहत व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करते हैं। पाठ्यक्रम को छात्र जीवन के सभी क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए तैयार किया जाता है। शिक्षाविदों और पाठ्येतर गतिविधियों का एक सही मिश्रण बनाता है, शैक्षिक यात्रा को उल्लेखनीय बनाता है।

**माहौल**

अक्सर, गुरुकुल शहर के जीवन की हलचल से दूर, पूर्ण शांति से घिरे सुरम्य स्थानों पर स्थित होते हैं। यहाँ पर कोमल दिमागों को एक संतुलित, विश्लेषणात्मक दृष्टि रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जो एक ऐसा माहौल सुनिश्चित करता है जहाँ शिक्षा उद्देश्यपूर्ण हो और पुरस्कृत भी हो। स्थान एक केंद्रीय भूमिका निभाता है; प्रकृति के बीच विराजमान होने के कारण, किसी भी सांसारिक विकर्षण से रहित एक ऐसा वातावरण प्रदान करता है जो सीखने के लिए सबसे अनुकूल है। ऐसे स्कूलों का शांत वातावरण शिक्षा और समग्र विकास के लिए आदर्श है।

**गुरुकुल में छात्रों के लिए शिक्षा का उद्देश्य**

**परम ज्ञान की प्राप्ति का उद्देश्य**

यह उस ज्ञान को प्राप्त करने का सेवाफल था जो सांसारिक सुखों को भूलने और ब्रह्म (ईश्वर) को समझने में मदद कर सकता था, दूसरे शब्दों में, अमरता प्राप्त करने के लिए। इस तरह के ज्ञान को बाकी सब चीजों से ऊपर माना जाता था। यह गुण, दोष, कारण, प्रभाव, अतीत और वर्तमान से अलग होना था।

**चरित्र विकास का उद्देश्य**

चरित्र निर्माण के लिए इच्छा–शक्ति का प्रशिक्षण आवश्यक समझा जाता था। इस उद्देश्य के लिए छात्र को केवल अच्छी चीजों के बारे में सोचने की आवश्यकता थी। उसे नैतिकता के विभिन्न नियमों का पालन करना पड़ता था। उसे प्रतिदिन वेदों तथा अन्य पूरक ग्रन्थों का अध्ययन करना पड़ता था। उपनिषद् एक छात्र को चेतावनी देता है कि यदि वह अपने चरित्र का विकास करना चाहता है तो वह बुरे आचरण को छोड़ दे।

**पूर्ण विकास का लक्ष्य**

पूर्ण विकास का उद्देश्य इंद्रियों को नियंत्रित करना और अंतर्मुखता का अभ्यास करना था। यह संपूर्ण जीवन जीने की आदर्श पद्धति मानी जाती थी जिसका अर्थ था सर्वांगीण विकास। गुरुकुल में नित्य किए जाने वाले विभिन्न कर्तव्यों को सर्वांगीण विकास के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रेरित करना था।

**व्यक्तिगत और सामाजिक उद्देश्य**

गुरुकुल में दैनिक जीवन में अनुशासन का अर्थ छात्रों में कई व्यक्तिगत और सामाजिक गुणों का विकास करना है। एक छात्र को अपने पूरे जीवन के लिए सच्चा होना आवश्यक है। शरीर, मन और हृदय के विकास के साथ छात्र को कुछ ऐसे गुण विकसित करने के लिए प्रशिक्षित किया गया जो उसे एक

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 11 , Issue : 01 | January - March 2024
DOI : https://doi.org/10.36676/urr.v11.i1.01

सामाजिक रूप से कुशल व्यक्ति बना सके। उसे छल, कूटनीति, अहंकार और असत्य से मुक्त होना आवश्यक है। उन्हें दान देने में विश्वास करना होता है।

**आध्यात्मिक विकास का उद्देश्य**

यज्ञों के प्रदर्शन को अन्य सभी चीजों से ऊपर माना जाता था। विभिन्न उपनिषदों ने आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक योग्यताओं की व्याख्या की है। कठोपनिषद् ने 'अंतर्मुखता' शब्द को आध्यात्मिक विकास के लिए सर्वोत्तम विधि के रूप में पेश किया है। इसका मतलब यह था कि एक छात्र को खुद को बाहरी दुनिया के लिए बंद करना पड़ता था और उसे पूरी तरह से अपने भीतर देखने की सलाह दी जाती थी।

**संस्कृति के लिए शिक्षा**

सत्य के सिद्धांत को सर्वोच्च गुण के रूप में सम्मानित किया गया। उपनिषद् काल में शिक्षा की संस्कृति के संरक्षण और विकास को सर्वोच्च महत्व दिया गया था। उपनिषद् काल में अतिथि सत्कार एक अनिवार्य सामाजिक दायित्व माना जाता था और इसे एक धार्मिक कर्तव्य का दर्जा भी दिया गया था। किसी राहगीर या अतिथि को भोजन कराना यज्ञ के समान समझा जाता था।

**गुरुकुल में अध्ययन करने के लाभ**

'गुरुकुल' के शिक्षक हिंदू धर्म, वेदों के बारे में ज्ञान प्रदान करते हैं और उन्हें जीवन का व्यावहारिक दृष्टिकोण देते हैं। उनका मुख्य उद्देश्य उन्हें अच्छा इंसान बनाना और उन्हें मानवीय मूल्यों की शिक्षा देना है। इसलिए गुरुकुल में गुरुकुल के शिक्षकों के लिए मानवीय मूल्य बहुत महत्वपूर्ण हैं।

उनकी शिक्षा प्रणाली आज की शिक्षा प्रणाली से अलग थी, गुरुकुल में वे छात्र के चरित्र को सुधारने में मदद करते हैं।

संचार का माध्यम 'संस्कृत' था। सभी पाठ संस्कृत भाषा में दिए गए थे। वे उन्हें संस्कृति, परंपरा और गुणों के बारे में जागरूक करते हैं और हिंदुओं की परंपरा को बढ़ावा देते हैं। छात्र अपने कौशल को अधिक कुशलता से विकसित करता है और अधिक अनुशासित हो जाता है।

''गुरु'' द्वारा दिए गए निर्देश सबसे महत्वपूर्ण चीजें हैं, और गुरुकुल के छात्रों को शिक्षक या गुरु के निर्देशों का पालन करना होता है। छात्र द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक धोती और कुर्ता थी, छात्र के लिए कोई विशेष वेशभूषा नहीं है। गुरुकुल के आचार्य छात्र को जीवन में किसी भी स्थिति से निपटने का तरीका सिखाते हैं।

**आधुनिक स्कूल में पढ़ाई के फायदे**

आधुनिक स्कूल 'गुरुकुल' से लगभग अलग है। आधुनिक स्कूल में शिक्षक अवधारणा को अधिक आसानी से समझने के लिए एक अलग तरह के शिक्षण उपकरण और तकनीक का उपयोग करता है। विभिन्न प्रौद्योगिकी में तेजी से विकास के साथ, शिक्षा प्रणाली लगभग बदल गई है। कंप्यूटर के उत्पादन के साथ, कंप्यूटर के बारे में ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक हो गया है।

अधिकतर स्कूलों के लिए संचार का माध्यम अंग्रेजी या हिंदी होता है। हिंदी में संवाद करने की परंपरा लगभग समाप्त हो चुकी है। लेकिन अभी भी कुछ स्कूल ऐसे हैं जो अभी भी छात्रों को संस्कृत पढ़ाते हैं। आधुनिक तकनीक के साथ स्कूल अधिक विकसित हो रहे हैं। वे अपने छात्रों को खेल और अन्य प्रकार की सुविधाएँ भी देते हैं। आजकल स्कूल प्रबंधक छात्रों की सुविधा के लिए एयर–कंडीशनर या पंखा लगाते हैं।

बच्चों को बेल्ट, बैज और आईडी कार्ड के साथ अच्छी तरह से इस्त्री की हुई वर्दी पहनना अनिवार्य होता है। शिक्षक छात्र को गणित, अंग्रेजी, हिंदी, विज्ञान आदि हर विषय के बारे में पढ़ाते और मार्गदर्शन करते हैं, लेकिन समय के साथ सभी बदलाव गलत नहीं हैं। हमें अपने को बदलना होगा, इसलिए स्कूल को भी बेहतर बनाया जा रहा है। उस जमाने में कुछ ही गुरु होते थे और छात्रों के लिए एक गुरु ही काफी होता था। लेकिन जनसंख्या में वृद्धि और विकास के साथ स्कूली शिक्षा के हिस्से का भी विस्तार और परिवर्तन होता है।

**गुरुकुल प्रणाली के गुण**

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 11 , Issue : 01 | January - March 2024
DOI : https://doi.org/10.36676/urr.v11.i1.01

1. गुरुओं के पास विशाल जानकारी थी और वे जानते थे कि सबसे कठिन चीजों को कैसे निर्देशित किया जाए।
2. इस परम्परा में जो समय लगता था, उसकी वजह से अधिकतर विद्यार्थी सर्वगुण सम्पन्न होकर निकलते थे।
3. वे एक विशेष शैली का अधिग्रहण करते थे और उच्च स्तर की दक्षता को विकसित करते थे।
4. शिष्य गुरु के प्रति उच्च सम्मान रखता था और अनुशासन की मांग करता था।
5. अधिकांश शिक्षण व्यावहारिक था और शिक्षा की इस शैली के कई फायदे थे।
6. छात्र को दिया गया वातावरण यह सुनिश्चित करता है कि वह अपनी रुचि के क्षेत्र में एक कारीगर/निपुण व्यक्ति बन जाए।

**गुरु शिष्य परम्परा के अवगुण**

1. एक ही गुरु के संरक्षण में होने के कारण विद्यार्थी को अधिक अनुभव नहीं मिलता था।
2. पाठ्यक्रम के लिए कोई दिन और आयु निर्धारित नहीं की गई थी। छात्र को पूरी तरह से शिक्षक पर निर्भर रहने की जरूरत थी।
3. पुराने ढाँचे ने कला के काल्पनिक पहलू को शामिल नहीं किया।
4. छात्र को गुरु के लिए रोजमर्रा के घरेलू काम भी करने पड़ते थे।

## निष्कर्ष

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि गुरुकुल प्रणाली एक स्वस्थ, कर्तव्यनिष्ठ विश्व का मार्ग है। हमें समग्र शिक्षा के माध्यम से युवा वर्ग को शिक्षित करने और उनके अंदर नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए इस दृष्टिकोण को आगे बढ़ाना चाहिए।

गुरुकुल के कारण को समझने की आवश्यकता है; यह कैसे काम करता था, अतीत में समाज कैसा था और वर्तमान समय में गुरुकुल प्रशिक्षण के उद्देश्य को कैसे पूरा किया जा सकता है। यह केवल अतीत की नकल करने का मामला नहीं है। यदि गुरुकुल ढांचे को जीवित रहना है और आज की आम जनता को प्रभावित करना है तो इसमें समायोजन और अत्याधुनिक निर्देश और परंपरा दोनों का मिश्रण होना चाहिए। नए युग की गुरुकुल शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को इस तरह से तैयार करना होना चाहिए कि उन्हें न केवल वर्तमान प्रशिक्षण ढांचे की सीख मिले, बल्कि उससे भी आगे की शिक्षा मिले। गुरुकुल स्नातकों को अपने साथियों की तुलना में घटिया महसूस नहीं करना चाहिए।

## संदर्भ सूची

आपस्तम्ब धर्मसूत्र, हरदत्त की टीका सहित, चौखंभा संस्कृत सीरीज वाराणसी।
आश्वलायन गृहसूत्र, नारायण की टीका सहित, निर्णय सागर प्रेस, बम्बई, 1894
उपनिषद, उपनिषद निर्णयसागर प्रेस, बम्बई; गीताप्रेस, गोरखपुर
ऐतरेय आरण्यक, संपादक कीथ, आक्सफोर्ड, 1909
ऐतरेय ब्राह्मण, षदगुरूशिष्यकृत सुखप्रदावृत्ति सहित, त्रावणकोर विश्वविद्यालय, संस्कृत सीरीज, त्रिवेन्द्रम।
कल्हण, राजतंरगिणी, एम.ए. स्टीन, दो भाग, 1900, वाराणसी, 1961; आर.एस. पंडित, 1935
कात्यायन स्मृति, संपादक, नारायणचन्द्र बंद्योपाध्याय, कलकत्ता, 1917
अग्रवाल वासुदेवशरण, पाणिनीकालीन भारत, मोतीलाल बनारसीदास, सं० 2012
पाण्डेय गोविन्द्र चन्द्र, बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास, लखनऊ, 1963
काणे, पी०वी०, धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ भाग, अनुवादक अर्जुन चौबे काश्यप, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान (हिन्दी समिति प्रयाग), तृतीय संस्करण
मिश्र जयशंकर, ग्यारहवीं शदी का भारत, वाराणसी, 1968
शर्मा, रामशरण, पूर्वकालीन भारतीय समाज तथा अर्थ व्यवस्था पर प्रकाश, दिल्ली, 1977

**वेबसाईट्स**

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 11 , Issue : 01 | January - March 2024
DOI : https://doi.org/10.36676/urr.v11.i1.01

https://www.educationworld.in/relevance-of-modern-gurukul-system-in-new-india/
https://askopinion.com/gurukul-system-of-education-vs-modern-education-system
https://www.google.com/search?q=gurukul+system+of+education+vs+modern+education&oq=g&aqs=chrome.4.69i57j0l3j35i39j69i60.3426j1j8&sourceid=chrome&ie=UTF-8
http://www.shareyouressays.com/knowledge/7-most-important-aims-of-education-for-the-students-in-the-gurukul-upanishadic-philosophy/111859
https://www.ijarse.com/images/fullpdf/1426573415_815.pdf